As per the information received from Coordinator N.S.S. ,(UoA)

Report

तर्क करने का हुनर अनुभव की व्यापकता से आता है- डॉ. पार्थेश्वर
जीवन में अपने अनुभव को हमेशा समृद्ध करते रहना चाहिए और साथ ही साथ अपने आस-पास घटित चीजों के साथ भी अपना रिश्ता कायम रखना चाहिए.सीखना केवल कक्षाओं में ही नहीं होता बल्कि कक्षाओं से ज्यादा हम अपने परिवेश में सीखते हैं.इस विशेष शिविर में आप बहुत सारे अनुशासन और व्यवहार से परिचित हो रहे हैं जरूरत है उन अनुभवों को जीवन के साथ सहजता से जोड़ने की. ये बातें हिंदी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ.आशुतोष पार्थेश्वर ने आज स्वराज विद्यापीठ में चल रहे राष्ट्रीय सेवा योजना इलाहाबाद विश्वविद्यालय की तीन इकाइयों 6,8,9 के विशेष शिविर में स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहीं. डॉ.पार्थेश्वर आज इस विशेष शिविर में स्वयंसेवकों के बीच आशु भाषण प्रतियोगिता के निर्णायक भी रहे. आशु भाषण प्रतियोगिता का विषय था-'आनलाइन शिक्षा कितनी कारगर' कुल 19 स्वयंसेवकों ने इसमें प्रतिभाग किया और इसके पक्ष और विपक्ष में अपनी बात रखी. इसमें रोहित कुमार को प्रथम और आदर्श कुमर,अभिषेक ओझा एवं धीरज को सामूहिक रूप से दूसरा स्थान प्राप्त हुआ. विशेष शिविर के दूसरे दिन की शुरुआत योग और प्राणायाम के साथ हुई। कार्यक्रम अधिकारी डा.अमृता ने जीवन में योग के महत्व को बताते हुए एक सफल व्यक्तित्व के निर्माण में अच्छे स्वास्थ्य की भूमिका को बताया। स्वयंसेवकों ने सुबह की प्रार्थना और लक्ष्यगीत के साथ आज के दिन की रूपरेखा तैयार की। आज शिविर में स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित की गयी. जल संरक्षण, पर्यावरण सुरक्षा और जनसंख्या नियंत्रण जैसे विषय पर स्वयंसेवकों ने बेहतरीन स्लोगन तैयार किये. कार्यक्रम अधिकारी डॉ. दीना नाथ मौर्य ने इस पूरे सत्र को संचालित किया. एन.एस.एस. समन्यवयक डॉ. राजेश गर्ग ने कार्यक्रम के दूसरे सत्र में स्वयंसेवकों के बीच अपनी ओजस्वी वाणी से जोश भर दिया. उन्होंने एक प्रेरणादायी कविता का भी पाठ किया.आज के शिविर में हिंदी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर कृपाशंकर पाण्डेय ने स्वयं सेवकों के साथ जीवन मूल्य और शिक्षा पर अपनी बात साझा की. डॉ.सुनील कुमार सुधांशु ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों से यह बताया की खुद से आगे बढ़कर हमें समाज की चिंता करनी चाहिए.हमारे जीवन का लक्ष्य सर्व् भूत हिते रतः होना चाहिए. इसी के साथ ही हम एक स्वयंसेवक के रूप में देश की चिंता से जुड़ सकते हैं.आज स्वयं सेवकों ने लोकगीत भी गाये और आपस में गीतों की दुनिया के बारे में चर्चा भी की. शाम 5 बजे राष्ट्रगान के साथ ही विशेष शिविर के तीसरे दिन का समापन हुआ.